INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 7.560 (SJIF 2024)

हेमवती नन्दन बहुगुणा विश्वविद्यालय द्वारा संचालित बी.एड. पाठयक्रम में अध्ययनरत छात्र अध्यापक एवम् छात्र अध्यापिकाओं की सामाजिक बुद्धि स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

(A comparative study of social intelligence level of the pupil teachers of B.Ed. course of Hemwati Nandan Bahuguna Garhwal University)

Dr. Anita Verma

Principal,
Pestle Weed College of Information Technology,
Dehradun (Uttarakhand, India)

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/03.2024-86269569/IRJHIS2403034

सार संक्षेप :

प्रस्तुत अध्ययन में हेमवती नन्दन बहुगुणा विश्वविद्यालय द्वारा संचालित बी.एड. पाठयक्रम में अध्ययनरत छात्र अध्यापक एवम् छात्र अध्यापिकाओं की सामाजिक बुद्धि स्तर का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य है–हेमवती नन्दन बहुगुणा विश्वविद्यालय द्वारा संचालित बी.एड. पाठयक्रम मे अध्ययनरत छात्र अध्यापक एवम् छात्र अध्यापिकाओं की सामाजिक बुद्धिस्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना। अध्ययन में निम्नलिखित परिकल्पना को निर्धारित किया गया है। हेमवती नन्दन बहुगुणा विश्वविद्यालय द्वारा संचालित बी.एड. पाठयक्रम मे अध्ययनरत छात्र अध्यापक एवम् छात्र अध्यापिकाओं की सामाजिक बुद्धिस्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अध्ययन हेमवती नन्दन बहुगुणा विश्वविद्यालय द्वारा संचालित बी0 एड0, पाठ्यक्रम में अध्ययनरत छात्र अध्यापक एवम् छात्र अध्यापिकाओं पर किया गया है। अनुसंधानकत्री ने अध्ययन" करने के लिए देहरादून जिले में स्थित हेमवती नन्दन बहुगुणा विश्वविद्यालय द्वारा संचालित शिक्षण प्रशिक्षण संस्थानों का चयन किया है। जिसमें बी.एड. में अध्ययनरत छात्र अध्यापक एवम् छात्र अध्यापिकाओं का चयन यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में अनुसंधानकत्री ने मानकीकृत उपकरण प्रयोग करने का निश्चय किया है। इस उपकरण का नाम है। "Social Intelligence Scale (SIS)" जो 1986 में N.K.Chadda और Usha Ganeshan द्वारा निर्मित किया गया है। शोध में "सामाजिक बुद्वि परीक्षण" से प्राप्त प्राप्तांको का मध्यमान, मानक विचलन और 't' परीक्षण का प्रयोग किया गया है। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है कि विश्वविद्यालय के बीएड के छात्र अध्यापक छात्र अध्यापिकाओं की सामाजिक बुद्वि स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। दोनों ही सामाजिक समायोजन में कुशल हैं।

मूल शब्द : *व्यवसायिक सहयोगात्मकता आत्मविश्वास भावुकता निपुणता, व्यवहार कुशलता विनोद प्रियता स्मरण शक्ति*

प्रस्तावना :

आज का युग व्यवसायिक शिक्षा का युग है। यह सामाजिक और व्यैक्तिक उन्नति के लिए अति आवश्यक है। सामान्य शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात ही विद्यार्थी व्यवसायिक शिक्षा में प्रवेश लेता है ताकि वह अपने सुनहरे भविष्य का निर्माण कर सके। अपने व्यवसाय में सफलता के लिए विद्यार्थी अपनी इच्छा, रूचि और

अपनी योग्यता के अनुसार ही व्यवसायिक, शैक्षिक पाठ्यक्रमों का चुनाव करता है। व्यवसायिक शिक्षा पिछले कई वर्षों से छात्रों के व्यवसायिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती आ रही है। आज व्यवसायिक पाठ्यक्रम विद्यार्थियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं क्योकि उनके व्यवसायिक जीवन में अनुकूल अवसर प्रदान करते हैं। ऐसे बहुत से व्यवसायिक, शैक्षिक पाठ्यक्रम है जो स्नातक और परास्नातक दोनों ही स्तरों पर किये जाते हैं। इसके लिए कुछ आवश्यक योग्यता के मापदण्ड होते हैं जिसके आधार पर इन पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेते हैं।

भारतवर्ष में जो व्यवसायिक शैक्षिक पाठ्यक्रम संचालित किये जा रहे हैं उनमें प्रमुख हैंः— बी.एड., बी. फार्म, बी.टेक, एम.बी.ए. आदि। इन व्यवसायिक शैक्षिक पाठ्यक्रमों में सफलता पाने के लिए विद्यार्थियों को अपनी योग्यता के अनुसार ही व्यवसायिक पाठ्यक्रमों का चुनाव करना चाहिए।

बी.एड. प्रशिक्षण — सफल शिक्षण प्रक्रिया के लिए अध्यापक, अध्यापिकाओं को प्रशिक्षित होना आवश्यक है। जिससे वे अपने शिक्षण कार्य को प्रभावी ढंग से कर सकें। अप्रशिक्षित अध्यापकों की तुलना में प्रशिक्षित अध्यापक अधिक प्रभावी सफल सिद्व होते हैं। सूचनाओं का प्रभावी ढंग से छात्रों तक सम्प्रेषण एक प्रशिक्षित अध्यापक द्वारा किया जा सकता है। अतः छात्रों को शिक्षित करने एवं योग्य शिक्षकों की आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए बी.एड. प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई है। जिनमें निम्न पक्षों पर विशेष बल दिया गया है।

1. शिक्षण का ज्ञान
2. शिक्षण कौशल
3. शिक्षण एवं प्रशिक्षण के प्रति अभिवृति

"सामाजिक बुद्वि" को इस योग्यता के एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में सम्मिलित किया जाता है। प्रत्येक व्यवसाय के लिए एक निश्चित सा0 बुद्धि की आवश्यकता होती है। सा0बुद्धि से तात्पर्य — मनुष्य को एक दूसरे को समझने व पारस्परिक संबंध स्थापित करने से है। व्यक्ति समाज में अपने व्यवहार द्वारा किस प्रकार से समाज में सामंजस्य स्थापित करता है यह सब उसकी सा0 बुद्धि पर ही निर्भर करता है।कार्ल अल्ब्रैम्ट ने व्यक्ति के व्यवहार को दो भागों में वर्गीकृत किया है। पोषित व्यवहार व विषैला व्यवहार। विषैला व्यवहार व्यक्ति को क्रोधित, निराश और अपराधी बना देता है जबकि पोषित व्यवहार व्यक्ति को मूल्यों से भरपूर आदरपूर्ण, दृढ़निश्चय वाला और उत्साहित बना देता है। विषैले व्यवहार से व्यक्ति का निम्न सामाजिक बुद्धिस्तर प्रदर्शित होता है जबकि पोषित व्यवहार से व्यक्ति का दूसरों से संबंध में स्थापित करने में मदद मिलती हैं और व्यक्ति के उच्च सामाजिक बुद्धि स्तर की ओर संकेत करता है।

क्या सामाजिक बुद्धि व्यक्तित्व है?

नहीं सामाजिक बुद्धि व्यक्तित्व नहीं है यह तो बुद्धि का एक समूह है। हावर्ड विश्वविद्यालय के प्रोफेसर हावर्ड गार्डनर ने बहुबुद्धि के सिद्वान्त को प्रतिपादित किया है। उनके अनुसार बहुबुद्धि का सिद्वान्त हाल ही में कुछ सालों में सामाजिक प्रतिपादित शिक्षा के क्षेत्र में विशेष रूप से स्वीकार किया गया।

प्रोफेसर गार्डनर ने अपने कई वर्षों के शोद्य के बाद बुद्धि के बहुत से श्रेणियों के बारे में बताया है। उसमें से सात प्रमुख हैं उसमें से कुछ को उन्होंने श्रेणी में व्यवस्थित किया है और कुछ विवादित हैं कि हम कितनी प्रकार की बुद्धि रखते हैं।

कार्ल अल्ब्रैम्ट ने इस श्रेणी को एक सरल प्रतिमान के रूप में विकसित किया है जो व्यवसाय और

व्यवसायिक व्यवस्था में प्रयोग होता है। कार्ल अल्ब्रैम्ट के सरलीकृत विश्लेषण के अनुसार हम बुद्धि के 6 आयामों से युक्त मानते हैं।

1. अमूर्त बुद्धि (Abstract)
2. सामाजिक बुद्धि (Social)
3. प्रयोगात्मक बुद्धि (Practical)
4. संवेगात्मक बुद्धि (Emotional)
5. सौन्दर्यात्मक बुद्धि (Aesthetic)
6. सम्पूर्ण सामर्थ्य बुद्धि (Kinesthetic)

व्यवहारिक विज्ञान के क्षेत्र में कुछ विशेषज्ञों के निर्णयों के आधार पर ही आयामों का निर्धारण किया गया जिनके द्वारा सामाजिक बुद्धि का मापन किया जाता है। विभिन्न पैमानों को तैयार करने के लिए सामाजिक बुद्धि के आयामों को वैज्ञानिक आधार पर चुना गया है। ये प्रमुख आठ आयाम हैं जो निम्न लिखित हैः–

1. धैर्य – तनावपूर्ण परिस्थितियों में शान्ति और सहनशीलता बनाये रखना।
2. सहयोगात्मकता – एक दूसरे के साथ अन्तःक्रिया करते हुये उनके मामलों मे खुशीपूर्वक सहयोग करने की योग्यता।
3. आत्मविश्वास – स्वयं में दृढ़विश्वास
4. भावुकता – शीघ्र ही सावधान होना और मानव व्यवहार के प्रति जिम्मेदार होना।
5. सामाजिक वातावरण की पहचान – वर्तमान परिस्थिति की प्रकृति और वातावरण को जानने की योग्यता।
6. निपुणता, व्यवहार कुशलता – किसी कार्य को सही तरीके से कहने और करने का बोध होना।
7. विनोद प्रियता – ध्यान आकृषित करने की क्षमता और जीवन के प्रकाशपूर्ण हिस्से को देखना।
8. स्मरण शक्ति – सभी प्रासंगिक निष्कर्षों को याद रखने का गुण, सभी नामों और उनकी मुखाकृति को याद रखने का गुण।

अध्ययन की सार्थकता :

आज हम देख सकते हैं कि हमारे देश में प्रतिभाशाली स्नातक अच्छी व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करके विदेशों में जाकर कार्य कर रहे हैं। जिसे प्रतिभा पलायन कहते हैं। इस समय हमारे देश में कई भारतीय तकनीकी संस्थान (IIT) और भारतीय प्रबंधक संस्थान (IIM) हैं। इसमें से निकलने वाले प्रशिक्षित स्नातक भी 50 प्रतिशत से अधिक विदेशों में चले जाते हैं। मेडिकल से निकलने वाले स्नातक भी प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में विदेश चले जाते हैं। इससे सबसे बड़ी चिन्ता यह है कि विज्ञान की प्रतिभाओं का पलायन हो रहा है जिससे हमारे देश में योग्य स्नातकों की कमी हो रही है। इसका प्रमुख कारण है समाजिकरण का अभाव। जिसके कारण वे समाज और राष्ट्र की चिन्ता नहीं करते और ऊंचा वेतन पाने के लिए विदेश चले जाते हैं।

अतः यह अति आवश्यक है कि विद्यार्थियों में समाजिकरण का विकास किया जाये जिससे उनकी सामाजिक बुद्धि का विकास हो सके। अतः स्पष्ट है कि शिक्षा और समाज में अटूट संबंध है और एक के बिना दूसरे का काम नहीं चलता है यह एक दूसरे के पूरक होते हैं। समाज शिक्षा को जन्म देता है और शिक्षा एक

नवीन समाज का निर्माण करती है और विद्यार्थियों में सामाजिक बुद्धि का विकास होता है यही सामाजिक बुद्धि बालकों के सामाजिक करण की प्रक्रिया का विकास कर समाज के ढांचे को मजबूत करने में मदद करती है। अतः अति आवश्यक है कि व्यवसायिक पाठयक्रम के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि स्तर का अध्ययन किया जाना चाहिए।

शोध अध्ययन का कथन :

"हेमवती नन्दन बहुगुणा विश्वविद्यालय द्वारा संचालित बी.एड. पाठयक्रम में अध्ययनरत छात्र अध्यापक एवम् छात्र अध्यापिकाओं की सामाजिक बुद्धि स्तर का तुलनात्मक अध्ययन"

शोध अध्ययन का उद्देश्य –

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्य को निर्धारित किया गया है–

हेमवती नन्दन बहुगुणा विश्वविद्यालय द्वारा संचालित बी.एड. पाठयक्रम मे अध्ययनरत छात्र अध्यापक एवम् छात्र अध्यापिकाओं की सामाजिक बुद्धिस्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना :

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित परिकल्पना को निर्धारित किया गया है।

हेमवती नन्दन बहुगुणा विश्वविद्यालय द्वारा संचालित बी.एड. पाठयक्रम मे अध्ययनरत छात्र अध्यापक एवम् छात्र अध्यापिकाओं की सामाजिक बुद्धिस्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध अध्ययन की सीमाओं का परिसीमन :

प्रस्तुत अध्ययन हेमवती नन्दन बहुगुणा विश्वविद्यालय द्वारा संचालित बी0 एड0, पाठ्यक्रम में अध्ययनरत छात्र अध्यापक एवम् छात्र अध्यापिकाओं पर किया गया है।

शोध प्रारूप :

करलिंगर के अनुसार – "शोध डिजाइन अनुसंधान करने के लिए बनी हुई एक परियोजना, युक्ति एवं संरचना है। जिसके द्वारा शोध समस्याओं का उत्तर प्राप्त किया जाता है।"

अध्ययन विधि

शोध में प्रयुक्त विधि – वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि :

प्रस्तावित शोधकार्य में अनुसंधानकत्री द्वारा शोध समस्या के सन्दर्भ व स्वरूप की दृष्टि से वर्णनात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। शैक्षिक समस्याओं के समाधान में सर्वाधिक रूप से प्रयुक्त विधि है। अतः अनुसंधानकत्री ने प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि को अपनाया है। क्योंकि सर्वेक्षण विधि से किसी भी क्षेत्र की तत्कालिक परिस्थिति की सही जानकारी प्राप्त हो सकती है।

अध्ययन हेतु जनसंख्या :

अध्ययन में अनुसंधानकत्री द्वारा जनसंख्या के रूप में देहरादून शहर के हेमवती नन्दन बहुगुणा विश्वविद्यालय के विभिन्न संस्थानों में बी.एड., पाठयक्रम में अध्ययनरत छात्र अध्यापक एवम् छात्र अध्यापिका ही इस अध्ययन की जनसंख्या है।

न्यादर्श :

अनुसंधानकत्री ने अपनी लघु शोध समस्या – "हेमवती नन्दन बहुगुणा विश्वविद्यालय द्वारा संचालित

बी.एड पाठयक्रम में अध्ययनरत् छात्र अध्यापक एवम् छात्र अध्यापिकाओं कीछात्र एवं छात्राओं की सामाजिक बुद्धिस्तर का तुलनात्मक अध्ययन" करने के लिए देहरादून जिले में स्थित हेमवती नन्दन बहुगुणा विश्वविद्यालय द्वारा संचालित शिक्षण प्रशिक्षण संस्थानों का चयन किया है। जिसमें बी.एड. में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं का चयन यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया है। इसमें क्रमशः 20 छात्र तथा 20 छात्राओं का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया हैं

अध्ययन हेतु उपकरण :

प्रस्तुत अध्ययन में अनुसंधानकत्री ने मानकीकृत उपकरण करने का निश्चय किया है। इस उपकरण का नाम है। "Social Intelligence Scale (SIS)" जो 1986 में N.K.Chadda और Usha Ganeshan द्वारा निर्मित किया गया है। इस उपकरण में 66 प्रश्नों को सम्मिलित किया गया है जो 5 भागों में विभाजित है। यह प्रश्न सामाजिक बुद्धि के विभिन्न 8 आयामों का मापन करते हैं यह 8 प्रकार के आयाम इस प्रकार हैं:–

धैर्य, सहयोगात्कता, आत्मविश्वास, भावुकता, सामाजिक वातावरण की पहचान, निपुणता, विनोदप्रियता एवं स्मरणशक्ति

इस परीक्षण को विश्वविद्यालय की विद्यार्थियो की जनसंख्या पर मानकीकृत किया गया है।

विश्वसनीयता – 0.89 से 0.96

वैधता – 0.70

Cross Validation – 0.75 – .0.95

विपरीत प्रमाणित करना

उपकरण का प्रशासन :

सामाजिक बुद्धि मापनी के प्रशासन के लिए सीमांकन के अंतर्गत आने वाले विभिन्न व्यवसायिक संस्थानों में जाकर व्यवसायिक पाठ्यक्रम के विभागाध्यक्ष से आज्ञा लेकर छात्र और छात्राओं से संपर्क स्थापित किया गया। उनसे विचार विमर्श के बाद निर्देश दिये गये तत्पश्चात उनको सामाजिक बुद्धि मापनी को वितरित किया गया। उनसे कहा गया कि वे निर्देर्शों के अनुसार अपने उत्तर गंभीरता से दें तथा यह भी जानकारी दी गई कि इसमें कोई समय सीमा नहीं है परन्तु शीघ्र करने का प्रयास किया जाये।

तत्पश्चात बी.एड. के छात्र अध्यापक एवम् छात्र अध्यापिकाओं द्वारा सामाजिक बुद्धि मापनी के सभी प्रश्नों के उत्तर चिन्हित किये गये तथा मापनी भरवाने के बाद उसी समय प्राप्त किये गये।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी विधियां :

शोध में "सामाजिक बुद्वि परीक्षण" से प्राप्त प्राप्तांको का मध्यमान, मानक विचलन और **'t'** परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का संगठन :

संगठित आंकड़ों को स्पष्ट एवं बोधगम्य बनाने के लिए उनका संगठन विश्लेषण और व्याख्या करना आवश्यक है। शैक्षिक अनुसंधानों में प्रदत्तों का संकलन शोध कार्यो के लिए ठोस आधार प्रदान करता है। शैक्षिक शोधकार्यों प्रदत्तों का संकलन विभिन्न उपकरणों के द्वारा किया जाता है।

1. प्रदत्तों का संकलन प्रमाणिक उपकरणों की सहायता से करना चाहिए।
2. प्रदत्तों को शोध समस्या के लिए सार्थक होना चाहिए।
3. प्रदत्तों के संकलन में जनसंख्या के मानकों का सही अनुमान लगाना चाहिए।
4. प्रदत्तों का स्वरूप इस प्रकार संकलित होना चाहिए जिससे उनका प्रस्तुतिकरण अथवा अर्थापन सुगमता से हो सके।
5. प्रदत्तों के संकलन में मापन त्रुटि तथा न्यादर्श त्रुटि कम से कम होनी चाहिए।

प्रदत्तों का विश्लेषण :

प्रदत्त संकलन से पूर्व विश्लेषण की योजना तैयार कर लेनी चाहिए। आरंभिक विश्लेषण में योजना की जांच करने के बाद आवश्यक हो तो प्रदत्तों के अंतिम विश्लेषण का विस्तार कर लेते हैं। इस प्रक्रिया में जब विश्लेषण योजित न हो तो सावधानी और सतर्कता से काम लेना होता है। – गुड बार एवं स्केटस के अनुसार

सारणीयन :

प्रदत्तों को स्पष्ट एवं बोधगम्य बनाने के लिए उनका सारणीयन आवश्यक है। प्रदत्तों को विभिन्न स्तम्भों एवं पंक्तियों में प्रस्तुत किया जाता है जिसे समझने में सरलता एवं सुविधा होती है। दूसरे शब्दों में सारणीयन का तात्पर्य उस विषय सामग्री का अवलोकन करने से है जो विशुद्व गणितीय पदों में वर्गीकृत हो तथा जिसको व्यवस्थित कर सारणीबद्व किया जा सके।

तालिका संख्या – 1

हेमवती नन्दन बहुगुणा विश्वविद्यालय के बी0 एड0 पाठयक्रम में अध्ययनरत छात्र अध्यापक एवम् छात्र अध्यापिकाओं की सामाजिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन

क्षेत्र	छात्र अध्यापक एवं छात्र अध्यापिकाओं की संख्या	कुल योग	मध्यमान	मानक विचलन	't'
छात्र अध्यापक	20	2198	109.9	31.82	0.18 < 0.05
छात्र अध्यापिका	20	2223	111.15	3.88	

उपरोक्त तालिका में हेमवती नन्दन बहुगुणा विश्वविद्यालय द्वारा संचालित बी.एड. पाठयक्रम में अध्ययनरत 40 छात्र अध्यापक, छात्र अध्यापिकाओं की सामाजिक बुद्धि को दर्शाया गया है। जिसमें 20 छात्र अध्यापक की सामाजिक बुद्धि का योग 2198 है जिसका मध्यमान 109.9 है एवं मानक विचलन 31.8 है। इसी प्रकार 20 छात्र अध्यापिकाओं की सामाजिक बुद्धि का योग 2223 है जिसका मध्यमान 111.15 है एवं मानक विचलन 3.88 है। इस प्रकार हेमवती नन्दन बहुगुणा विश्वविद्यालय के छात्र अध्यापक, छात्रा अध्यापिकाओं की सामाजिक बुद्धि के **'t'** परिक्षण का मान 0.18 है जो 0.05 सार्थकता स्तर से कम है। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

हेमवती नन्दन बहुगुणा विश्वविद्यालय के बी0 एड0 पाठयक्रम में अध्ययनरत छात्र अध्यापक एवम् छात्र अध्यापिकाओं की सामाजिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन का प्रदर्शन मध्यमान में

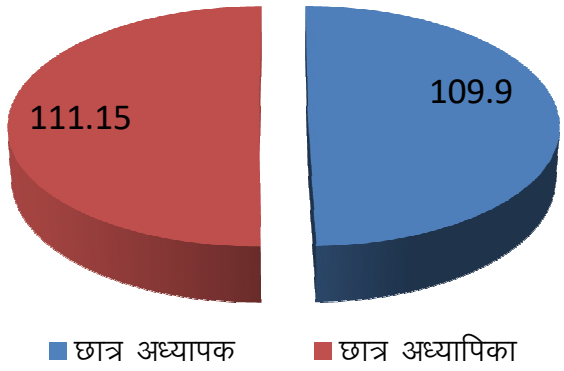

शोध निष्कर्ष एवं परिणाम :

प्रस्तुत शोध समस्या में हेमवती नन्दन बहुगुणा विश्वविद्यालय द्वारा संचालित बीएड के छात्र अध्यापक एवम् छात्र अध्यापिकाओं की सामाजिक बुद्वि का तुलनात्मक अध्ययन करना है; इस विषय में सामाजिक बुद्वि परीक्षण से प्राप्त प्राप्ताकों के विश्लेषण से निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए हैं।

अध्ययन से ज्ञात होता है कि दोनों विश्वविद्यालयों के बीएड पाठयक्रम के छात्र अध्यापक, छात्र अध्यापिकाओं की सामाजिक बुद्वि 't' परीक्षण का मान 0.18 है जो 0.05 सार्थकता स्तर से कम है। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है कि हेमवती नन्दन बहुगुणा विश्वविद्यालय के बीएड के छात्र अध्यापक एवम् छात्र अध्यापिकाओं की सामाजिक बुद्वि स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। दोनों ही सामाजिक समायोजन में कुशल हैं।

शैक्षिक उपयोगिता :

शैक्षिक शोध शिक्षा के क्षेत्र की समस्याओं का समाधान कर शिक्षा के विकास के महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करते हैं। प्रस्तुत शोध बीएड पाठयक्रम के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्विमता के क्षेत्र में किया गया है। जो विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्वि के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान करता है। इससे यह ज्ञात होता है कि यदि विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि का अध्ययन किया जाये तो वह समाज में उचित प्रकार से समाजयोजन करने में सफल हो सकेंगे और समाज में अनुकूलन प्राप्त करके एवम समाज की मान्यताओं एवं मूल्यों के अनुरूप अपने व्यवहार में परिवर्तन कर सकेंगे शिक्षा इस कार्य में व्यक्ति की सहायता करती है। आज के व्यवसायिक युग में सामान्य शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात ही विद्यार्थी व्यवसायिक शिक्षा में प्रवेश लेता है। यह प्रवेश वह अपनी इच्छा रूचि व अपनी योग्यता के अनुसार ही चुनता है। सामाजिक बुद्वि को इस योग्यता के महत्वपूर्ण कारक के रूप में सम्मिलित किया जाता है। प्रत्येक व्यवसाय के लिए एक सामाजिक बुद्वि की आवश्यकता होती है। इसी के द्वारा मनुष्य एक दूसरे को समझने और पारस्परिक सम्बन्ध स्थापित करने में सफल होते हैं और सामाजिकरण की प्रक्रिया का विकास कर समाज के ढांचे को मजबूत बनाते हैं।

भविष्य में शोध के लिए सुझाव :

- प्रस्तुत समस्या के अध्ययन के क्षेत्र, सीमांकन व प्रतिदर्श में वृद्वि कर शोध किया जा सकता है।
- विभिन्न व्यवसायिक पाठयक्रम के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि का अध्ययन किया जा सकता है।
- छात्रों में सामाजिक समायोजन के प्रति रूचि के विकास का अध्ययन किया जा सकता है।
- विद्यार्थियों में सामाजिक गुणो के विकास किया का अध्ययन किया जा सकता है।
- विद्यार्थियों में सामाजिकरण की प्रक्रिया का अध्ययन किया जा सकता है।
- सामाजिक बुद्धि के विभिन्न आयामों के विकास का अध्ययन किया जा सकता है।
- विद्यार्थियों को सामाजिक गुणवत्ता का अध्ययन किया जा सकता है।
- छात्र–छात्राओं में सामाजिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. कौल लोकेश (2009) शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली, विकास प्रकाशन नोएडा।
2. गुप्ता, एस.पी. (2010) सांख्यिकी विधियां, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
3. गुप्ता, सुशील, गुप्ता अलका (2010) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान शाखा पुस्तक भवन इलाहाबाद।
4. पाण्डेय, डॉ. रामशकल (2007) शिक्षा मनोविज्ञान, आर.लाल. बुक डिपो मेरठ।
5. पाठक पी.डी. (1995) शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
6. बुच, एम.बी. (1978–83) शिक्षा में अनुसंधान, तीसरा सर्वेक्षण वोल.–2 बडौदा।
7. बुच, एम.बी. (1988–92) शिक्षा में अनुसंधान, चौथा सर्वेक्षण वोल.–2 बडौदा।
8. बुच, एम.बी. (1988–92) शिक्षा में अनुसंधान, पांचवा सर्वेक्षण वोल.–2 बडौदा।
9. भटनागर, सुरेश (2007) शिक्षा मनोविज्ञान, आर लाल बुक डिपो, मेरठ।
10. भटनागर, सुरेश (2007) शिक्षा अनुसंधान, लायल बुक डिपो, मेरठ।
11. मंगल एस.के. (2010) शिक्षा मनोविज्ञान, एच.पी. लरनिंग पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
12. लाल, रमन बिहारी (2009) भारतीय शिक्षा व्यवस्था का विकास, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ
13. सिंह अरूण कुमार (2006) मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, तथा शिक्षा में शोध विधियां, मोतीलाल बनारसी दास प्रकाशन दिल्ली।
14. शर्मा आर.ए. (2012) शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व आर.लाल बुक डिपो मेरठ
15. शर्मा. आर.ए. (2009) शिक्षा तकनीकी के तत्व निर्देशन एवं प्रबन्धन आर लाल बुक डिपो मेरठ।
16. लाल एवं जोशी (2012) शिक्षा मनोविज्ञान एवं प्रारम्भिक सांख्यिकी, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
17. भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका (2011) वोल.–30, नं.–2